Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 01, No. 10, December. 2024

केदारनाथ घाटी आपदा (जून 2013) में राहत व बचाव कार्यों का विश्लेषण

[1]निधि राणा*
भूगोल विभाग,
डा. सी. वी. रमन यूनिवर्सिटी, भगवानपुर, वैशाली, बिहार
&
[2]डा. अखिलेश्वर कुमार द्विवेदी,
असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल,
श्री अ. प्र. ब. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अगस्त्यमुनि, रुद्रप्रयाग, उत्तराखंड

सारांश

16-17 जून 2013 को केदारनाथ क्षेत्र में आई बाढ़ आपदा में केदारनाथ घाटी बुरी तरह से तहस-नहस हो गई थी उस दौरान पर्यटन अपनी चरम सीमा पर था काफी संख्या में देश-विदेश से आए पर्यटक प्रसिद्ध केदारनाथ के दर्शन की अभिलाषा से केदारनाथ घाटी में पहुंच चुके थे मानसून के समय से क्षेत्र में दस्तक देने की वजह से अति वर्षा व बाढ़ की वजह से 16 व 17 जून को भीषण तबाही हुई और इस तबाही में पर्यटकों के साथ-साथ स्थानीय जनमानस भी आपदा के शिकार हुए। इस आपदा के अंतर्गत कई भवन, संपर्क मार्ग क्षतिग्रस्त अथवा पूर्ण रूप से ध्वस्त हुए। जिसके फल स्वरुप पर्यटक व स्थानीय जनमानस विभिन्न स्थानों पर फंसे रहे, भोजन, पीने के पानी व रहने की व्यवस्था की किल्लत हुई तथा अधिकांश लोगों का स्वास्थ्य भी खराब हुआ। विकट परिस्थितियों को देखते हुए सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों व कारपोरेट सेक्टर ने राहत व बचाव कार्यों में बढ़-चढ़कर अपना योगदान दिया इनके माध्यम से विभिन्न स्थानों पर फंसे हुए लोगों को विभिन्न स्थलीय मार्गों व हवाई मार्ग से गंतव्य तक पहुंचाया गया, राहत शिविरों में रहने, भोजन व पीने के पानी की व्यवस्था की गई, चिकित्सा व आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध कराई गई।

Keywords: Democracy, Global Citizenship, Development, Development Education, International Volunteering.

प्रस्तावना- "प्राकृतिक आपदायें मानव के सामाजिक विकास के साथ-साथ आती हैं। जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय समस्याओं के कारण प्राकृतिक आपदाओं ने हाल के वर्षों में आवृत्ति, गतिशीलता, जटिलता, अप्रत्याशिता और विनाशकारिता की विशेषताएं

* Corresponding Author: Nidhi Rana
Email: phdnidhi1@gmail.com
Received 15 Nov. 2024; Accepted 19 Dec. 2024. Available online: 30 Dec. 2024.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

दिखायी है।"[1] "विशेष रूप से विकासशील देशों में प्राकृतिक आपदाओं द्वारा देश के व्यापक आर्थिक और पर्यावरणीय संसाधनों को प्रभावित करने की क्षमता होती है।"[2] "सामाजिक प्रणालियां, जो अपने जटिल अंतर्संबंधों और समग्र प्रकृति की विशेषता रखती है, महत्वपूर्ण प्राकृतिक आपदाओं के मद्देनजर पूरा समाज क्षति में तेजी से वृद्धि का अनुभव कर सकता है। इससे अक्सर सामाजिक-आर्थिक अस्थिरता और संसाधन उपलब्धता में स्पष्ट असमानता होती है।"[3] "प्रमुख प्राकृतिक आपदाएं आपातकालीन संसाधनों की तत्काल मांग को जन्म देती है, जिससे आपातकालीन आपूर्ति, बचावकर्मी, धन, आपातकालीन संचार और बहुत कुछ सम्मिलित है, ऐसे संसाधनों की आवश्यकतायें विविध और विषम है।"[4] "आपातकालीन प्रतिक्रिया के लिए महत्वपूर्ण संकेतक प्रतिक्रिया की गति, संसाधन आवंटन के लिए स्टॉकिस्टिक प्लानिंग मॉडल का निर्माण प्रबंधकों को संसाधन वितरण की चुनौती से निपटने में सहायता करता है।"[5] "फिर भी जब अचानक प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है तो सरकार की आपातकालीन प्रबंधन प्रणाली प्रारंभिक प्रतिक्रिया चरणों के दौरान नौकरशाही बाधाओं में फंस जाती है।"[6] "इसके अलावा आपदाएं अक्सर महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचों को काफी नुकसान पहुंचाती है, जिसके परिणाम स्वरूप राहत आपूर्ति और बचाव बलों का प्रवाह बाधित होता है क्योंकि आधुनिक समाज बुनियादी ढांचा प्रणालियों की सेवाओं पर तेजी से निर्भर होता जा रहा है।"[7] "सरकार की क्षमता और संसाधन की सीमाएं प्राकृतिक आपदाओं का त्वरित व कुशलता से जवाब देना मुश्किल बनाती है आपदा प्रतिक्रिया प्रभावशीलता भौतिक-सामाजिक प्रणाली के भीतर कार्यों के एकीकरण पर निर्भर है, भौतिक प्रणाली के कार्य बुनियादी ढांचे के संचालन में सन्निहित है और सामाजिक प्रणाली के कार्य सामाजिक संगठनों के सहयोग से दर्शाये जाते हैं।"[8]

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि किसी भी प्रकार की आपदा में हुई क्षति से उबरने के लिए राहत व बचाव कार्य अति महत्वपूर्ण है जो कि आपदा पूर्व व आपदा के पश्चात की तैयारी के समन्वय द्वारा ही संभव है।

अध्ययन का उद्देश्य- अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य जून 2013 में केदारनाथ घाटी में हुई आपदा व उससे हुई क्षति के पश्चात सरकारी, गैर सरकारी संगठनों द्वारा किए गए राहत व बचाव कार्यों का अध्ययन व विश्लेषण करना है।

शोध विधि तंत्र- प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग करते हुए अवलोकनात्मक, विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि तंत्रों का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र- केदारनाथ घाटी जनपद रुद्रप्रयाग में स्थित है जनपद रुद्रप्रयाग उत्तराखंड राज्य के गढ़वाल मंडल में 29˚55'37'' से 31˚28'01'' उत्तरी अक्षांश तथा 78˚54' से 79˚02' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है इसका कुल क्षेत्रफल 1984 वर्ग कि०मी० है तथा इसकी समुद्र तल से औसत ऊंचाई 693 मीटर है। इस जनपद के उत्तर-पूर्व में जिला चमोली, उत्तर-पश्चिम में जिला उत्तरकाशी, पश्चिम में जिला टिहरी गढ़वाल तथा दक्षिण में पौड़ी गढ़वाल स्थित है।

व्याख्या एवं विश्लेषण:-

आपदा का प्रभाव:- मानसून की शुरुआत 10 जून 2013 से ही केदारनाथ क्षेत्र में हो चुकी थी तथा 13, 14 व 15 जून 2013 की लगातार वर्षा ने वहां के जीवन को अस्त–व्यस्त करना प्रारंभ कर दिया था। इस दौरान केदारनाथ घाटी क्षेत्र में लगभग 25-30 हज़ार तीर्थयात्रियों का जमावड़ा भी हो चुका था (इतनी संख्या में तीर्थ यात्रियों का एक साथ इस क्षेत्र में एकत्रित होने का मुख्य कारण 10 जून से 13 जून तक केदारनाथ मंदिर समिति के पुजारियों द्वारा केदारनाथ मंदिर का मुख्य द्वार बंद कर दिया जाना था, जिसके कारण दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं की संख्या निरंतर बढ़ती गई तथा वहां से वापस आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या सापेक्षतया कम रही)। इतनी भारी संख्या में तीर्थ यात्रियों का सोनप्रयाग से केदारनाथ तक एकत्रित होना तथा मानसून का समय से आना और अतिवर्षा के कारण सुनामी जैसी स्थिति का उत्पन्न होने के कारण भारी संख्या में कई प्रकार की हानियों का सामना संपूर्ण केदारनाथ घाटी क्षेत्र को करना पड़ा। 16 एवं 17 जून 2013 को उत्पन्न आपातकालीन स्थिति का विवरण आरेख संख्या 1 एवं 2 से स्पष्ट है।

16 जून 2013 की आपातकालीन स्थिति

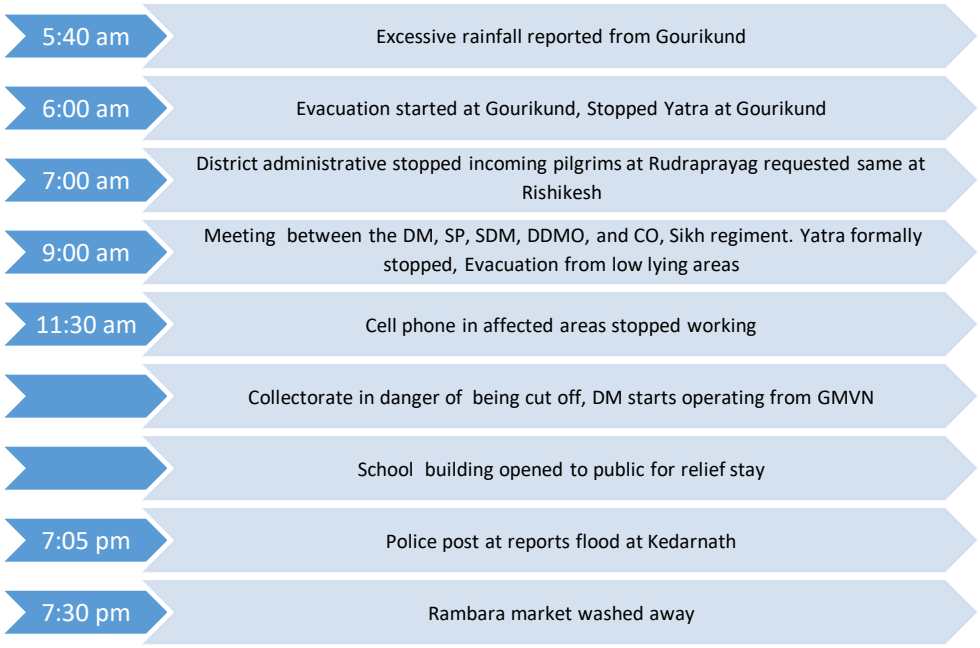

स्रोत: जिला प्रशासन, उत्तराखंड शासन

आरेख सं०1

Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 01, No. 10, December. 2024

17 जून 2013की आपातकालीन स्थिति

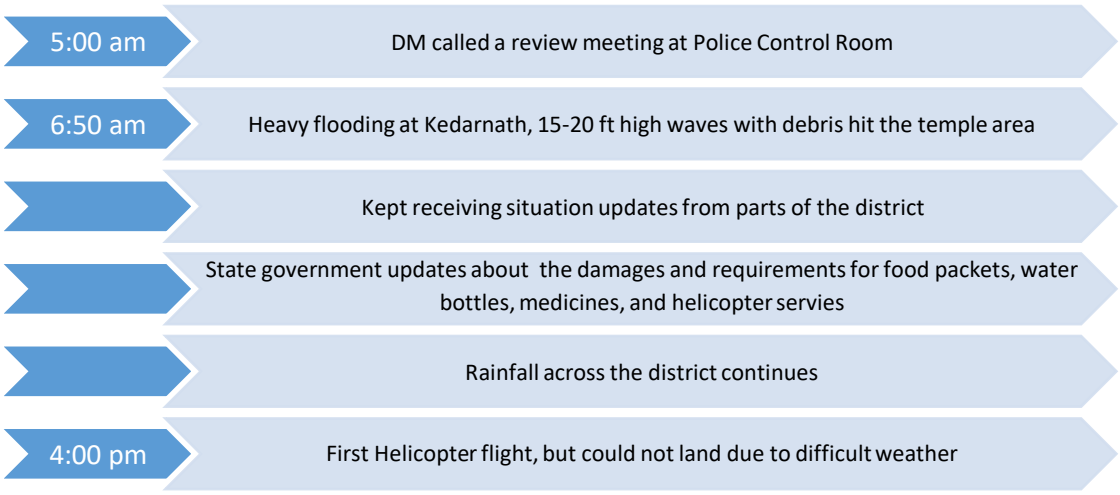

स्रोत: जिला प्रशासन, उत्तराखंड शासन

आरेख सं० 2

16 एवं 17 जून 2013 को आई दैवीय आपदा का प्रभाव निम्नवत है:-

1. **मानव जीवन** :- इस दैवीय आपदा के कारण सड़क मार्गों व पुलों के क्षतिग्रस्त होने से लगभग 50,000 नागरिक शेष भारत से अलग-थलग हो गए थे। इसके अतिरिक्त लगभग 651 स्थानीय व्यक्ति या तो लापता हो गए अथवा उनकी मृत्यु हो गई। 3,998 तीर्थ यात्री या तो लापता हो गए अथवा मर गये। (तालिका 1)

तालिका 1: लापता/मारे गए तीर्थयात्रियों/व्यक्तियों का विवरण

विवरण	संख्या
लापता/मारे गए व्यक्ति	651
लापता/मारे गए तीर्थ यात्री	3998
शेष भारत से अलग-थलग व्यक्ति	50,000

Source : Daily Reports, Rudraprayag District Administration.

2. **अवस्थापनात्मक संरचना** :- आपदा के प्रभाव के कारण 79 संपर्क मार्ग बाधित हो गए, राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 109 (रुद्रप्रयाग- गौरीकुंड) कई स्थानों पर क्षतिग्रस्त हो गया। इसके अतिरिक्त 29 पुल भी विभिन्न स्थानों पर क्षतिग्रस्त हुए अथवा बह गए। संपर्क मार्गों के बाधित होने के कारण 74 गांवों का संपर्क टूट गया, इसके अतिरिक्त कई प्राथमिक विद्यालय एवं उच्च विद्यालय आशिक एवं पूर्ण रूप से बर्बाद हो गए। इसके साथ ही साथ विभिन्न सरकारी विभाग भी पूर्ण व आंशिक रूप से बर्बाद हुए।

लगभग 100 जल आपूर्ति की योजना भी प्रभावित हुई। आपदा के दौरान 450 गांव की विद्युत आपूर्ति ठप हो गयी।

तालिका 2: विभिन्न सरकारी विभागों का हुआ नुकसान (करोड़ों रूपए में)

विभाग	नुकसान (करोड़ो रूपए में)
पी०डब्ल्यू०डी० प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना	72.80
सिंचाई विभाग	29.63
लघु सिंचाई विभाग	5.87
जल संस्थान	9.09
विद्युत आपूर्ति विभाग	6.72
अन्य विभाग	17.79
कुल	141.89

Source: District Administration Report, August 2013.

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि इस दैवीय आपदा के कारण पी०डब्लू०डी० तथा प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना को 72.80 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ, जबकि सिंचाई विभाग को 29.63, लघु सिंचाई विभाग को 5.87, जल संस्थान को 9.08, विद्युत आपूर्ति विभाग को 6.72 व अन्य विभागों को 17.59 करोड़ रूपों का नुकसान हुआ है।

जनपद रुद्रप्रयाग के उपर्युक्त सरकारी विभागों को कुल 141.89 करोड़ रूपयों का नुकसान हुआ है।

3. **निजी संपत्ति** :- जून 2013 की आपदा के कारण लोगों के 1540 घर या तो पूर्ण रूप से अथवा आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुये। 1296 पालतू पशु लापता हुए, विभिन्न लोगों की 75.4 हेक्टेयर भूमि आपदा के कारण बह गई। विभिन्न व्यवसायों के 468 व्यावसायिक प्रतिष्ठान क्षतिग्रस्त हो गए (तालिका 3)।

तालिका 3:- नुकसान हुए निजी संपत्ति का विवरण

विवरण	संख्या
पूर्ण व आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त घर	1540
लापता हुए पालतू पशु	1296
क्षतिग्रस्त हुए व्यावसायिक प्रतिष्ठान	468
आपदा में बही कुल भूमि	75.4 हेक्टेयर

Source : Daily Reports, Rudraprayag District Administration.

जनपद रुद्रप्रयाग के विभिन्न तहसीलों (रुद्रप्रयाग, ऊखीमठ व जखोली) में पूर्ण रूप अथवा आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त घरों का विवरण निम्न तालिका 4 से स्पष्ट है:-

तालिका 4: तहसील व क्षतिग्रस्त (पूर्ण/आंशिक) मकानों का विवरण

तहसील	पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त मकानों की संख्या	आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त मकानों की संख्या	कुल संख्या
रुद्रप्रयाग	219	236	457
ऊखीमठ	351	215	566
जखोली	188	329	517
कुल	758	762	1540

Source : Daily Reports, Rudraprayag District Administration.

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त मकानों की सर्वाधिक संख्या (351) ऊखीमठ तहसील में है। जबकि सबसे कम 188 जखोली तहसील में है। ऊखीमठ तहसील के पश्चात दूसरे स्थान पर रुद्रप्रयाग तहसील में मकानों (219) का पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्तीकरण हुआ है। आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त मकानों की संख्या सर्वाधिक जखोली तहसील में 329 है, जबकि दूसरे स्थान पर रुद्रप्रयाग तहसील के 238 मकान व सबसे कम ऊखीमठ तहसील में 215 मकान आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुए हैं। यदि कुल क्षतिग्रस्त (आंशिक+पूर्ण) मकान की संख्या देखें तो स्पष्ट होता है कि 566 मकान ऊखीमठ तहसील में क्षतिग्रस्त हुए हैं उसके पश्चात जखोली में 517 मकान तथा तीसरे स्थान पर रुद्रप्रयाग तहसील के 457 मकान क्षतिग्रस्त हुए हैं।

आपदा में राहत एवं बचाव कार्य :-

आपदा के दौरान सरकारी संगठनों एवं विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों तथा कारपोरेट सेक्टर का विभिन्न आपदाग्रस्त क्षेत्रों में कई प्रकार से राहत एवं बचाव का कार्य किया गया जिसका विवरण निम्नवत है :-

वायु मार्ग द्वारा राहत एवं बचाव कार्य:- आपदा के प्रभाव से राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 109 व विभिन्न संपर्क मार्गों के भिन्न-भिन्न स्थानों पर पूर्ण/आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त होने के कारण विभिन्न स्थानों पर फंसे तीर्थयात्रियों व स्थानीय लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाने हेतु निजी एवं सरकारी हेलीकॉप्टरों की सहायता ली गई। जिसके 18-20 हेलीकॉप्टरों की सेवाएं सम्मिलित थी।

- हेलीकॉप्टरों के लैंडिंग के लिए विभिन्न विषम व दुर्गम स्थानों जैसे नदी के किनारे वह पहाड़ों पर अस्थाई हैलीपैड का निर्माण किया गया।
- हेलीकॉप्टरों के माध्यम से कुल 6815 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया।
- सर्वाधिक राहत सहायता का कार्य 18 जून 2024 जून तक किया गया।
- 25 एवं 26 जून को खोज एवं बचाव कार्य किया गया।
- राहत बचाव कार्य 10 स्थायी व 17 अस्थायी हैलीपैड की सहायता से किया गया।

- हेलीकॉप्टरों के माध्यम से 30,000 खाने के पैकेट विभिन्न दुर्गम स्थानों पर गिराए गए जिससे स्थानीय लोगों व तीर्थ यात्रियों को लाभ मिला।
- उपरोक्त के अतिरिक्त तीर्थ यात्रियों के लिए पानी की बोतल, बिस्कुट एवं खाने के पैकेट भी गिराए गए।
- उपरोक्त सामग्रियों को पहुंचाने के पश्चात उन स्थानों से फंसे हुए तीर्थ यात्रियों को सुगम स्थान पर पहुंचाया गया।
- शेष भारत से कटे हुए गांवों को हेलीकॉप्टर के माध्यम से राहत सामग्रियां 17 जुलाई तक पहुंचाई गई। इस दौरान 4,999 खाने की पैकेट तथा 691 क्विंटल अनाज उपलब्ध कराया गया।

राहत एवं बचाव कार्यों में संलग्न विभिन्न कार्मिक:- आपदा के राहत एवं बचाव कार्यों में संलग्न विभिन्न विभागों क्षेत्र के कार्मिकों का विवरण निम्नवत है

पुलिस विभाग - 200 पुलिसकर्मी।

आइ०टी०बी०पी० -281 जवान।

भारतीय नौसेना - 195 सैनिक।

एन०डी०आर०एफ०- 300 जवान।

जिला आपदा प्रबंधन दल - 20 जवान।

होमगार्ड - 106 जवान।

उपरोक्त के अतिरिक्त सीमा सुरक्षा बल, नेहरू पर्वतारोहण संस्थान, भारतीय नौसेना, नागरिक सुरक्षा-नागपुर, टी०डी०आर०एफ० मुंबई इत्यादि विभाग/क्षेत्र के माध्यम से भी राहत एवं बचाव कार्य किए गए।

राहत शिविर:- जिला प्रशासन द्वारा 17 जून से 30 जून तक 15 राहत शिविरों का संचालन किया गया जो कि विभिन्न स्थानों जैसे गुप्तकाशी, रूद्रप्रयाग, अगस्त्यमुनि, फाटा, जाखधार इत्यादि स्थानों पर किए गए।

इन राहत कैंपों में कुल 82,825 तीर्थयात्रियों को सुरक्षा प्रदान की गई। इन राहत कैंपों में सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों व स्थानीय व्यवस्थाओं ने राहत सामग्री की आपूर्ति की। रुद्रप्रयाग के विभिन्न स्थानों पर राहत शिविरों का विवरण निम्नवत है

तालिका 5 रुद्रप्रयाग के विभिन्न स्थानों पर राहत शिविरों का विवरण

राहत शिविर स्थल	तिथि से	तिथि तक	तीर्थ यात्रियों की संख्या
रुद्रप्रयाग मुख्य बाजार	21 जून	23 जून	8000
रा०इ०का० अगस्त्यमुनि	17 जून	06 जुलाई	2965

नयाली	19 जून	22 जून	6500
रा०इ० का० गुप्तकाशी	18 जून	30 जून	12000
गुप्तकाशी मुख्य बाज़ार	18 जून	28 जून	22000
गुप्तकाशी विद्याधाम	18 जून	30 जून	20000
हैलीपैड फाटा	19 जून	23 जून	5000
हैलीपैड जाखवार	18 जून	30 जून	1500
अन्य 7 राहत शिविर	17 जून	30 जून	4860
योग			**82825**

Source: District Administration Report, August 2013.

उपरोक्त तालिका 5 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक राहत कैंप गुप्तकाशी के विभिन्न स्थानों से राजकीय इंटर कॉलेज, मुख्य बाजार तथा विद्याधाम में स्थापित किए गए। जिनमें कुल 54000 तीर्थयात्रियों को शरण दी गई, गुप्तकाशी में सर्वाधिक संख्या में तीर्थ यात्रियों को शरण देने का मुख्य कारण गौरीकुंड से नजदीकी व दूसरा मुख्य कारण मंदाकिनी नदी की अधिग्रहण क्षेत्र से काफी ऊंचाई पर यह क्षेत्र स्थित होने के कारण पूर्ण रूप से सुरक्षित स्थान है।

स्वास्थ सुविधा:- आपदा में फंसे लोगों के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों के सहयोग से स्वास्थ्य शिविर भी लगाए गए जिनकी उपलब्धियां निम्नवत है -

उपलब्धियां:-

- 17 जून को जिला स्वास्थ्य सुरक्षा विभाग द्वारा 6 चिकित्सा शिविर संचालित किए गए।
- शुरुआत के 10 दिनों में 4,400 स्वस्थ व्यक्तियों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई।
- उपरोक्त शिविरों में विभिन्न जनपदों से 50 चिकित्सकों को नियुक्त किया गया। इसके अतिरिक्त 150 पैसा पैरामेडिकल चिकित्सकों को भी नियुक्त किया गया।
- स्वास्थ्य सुविधाओं को और अधिक व्यक्तियों तक पहुंचाने के उद्देश्य से गैर सरकारी संगठनों जैसे रेड क्रॉस, फोर्टिस एंमरी केयर्स, हेल्प एज इंडिया, डी० एफ० वाई०, रिलायंस फाउंडेशन, शांतिकुंज ट्रस्ट, एच०आई०एच०टी० इत्यादि ने भी विभिन्न स्थानों पर अपने स्वास्थ्य सिविर लगाए।
- शेष भारत से अलग-थलग पड़े स्थान पर फंसे लगभग 40-50 रोगियों जिनमें हृदय रोगी, प्रसूता स्त्री तथा अन्य गंभीर बीमारियों से ग्रस्त रोगियों को हेलीकॉप्टर के माध्यम से जिला अस्पताल रुद्रप्रयाग, श्रीनगर बेस अस्पताल तथा जॉलीग्रांट देहरादून तक पहुंचाया गया।

सड़क मरम्मत कार्य:- राहत सामग्रियों को और उचित ढंग से पहुंचने संपर्क मार्गों को पुनः चालू करने हेतु सड़क मरम्मत का कार्य तीव्र गति से करने का प्रयास किया गया इसमें काफी हद तक सफलता भी प्राप्त हुई। विभिन्न महीनों में सड़क मार्गों की मरम्मत में मिली सफलता का विवरण निम्नवत है-

तालिका 6 विभिन्न महीना में सड़क मरम्मत कार्य का विवरण:-

महीना	सड़क मार्गों का खुलना (संख्या में)
जून	27
जुलाई	34
अगस्त	06
सितम्बर	05
अक्तूबर	03

Source: PWD, Rudraprayag.

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि जून 2013 में 27 सड़क मार्ग खुल गए वहीं जुलाई में 34 सड़क मार्गों का संचालन प्रारंभ हुआ जबकि अगस्त, सितंबर व अक्टूबर में क्रमशः 06, 05 व 03 सड़क मार्ग का संचालन प्रारंभ हुआ। वर्तमान में भी उपरोक्त सड़क मार्गों का मरम्मत का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है।

राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 109 (रुद्रप्रयाग-गौरीकुंड) 7 सितंबर से सोनप्रयाग तक संचालित हो गया।

वित्तीय सहायता :- आपदा से प्रभावित विभिन्न परिवारों को सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की गई जिसका विवरण तालिका 7 से स्पष्ट है:-

तालिका 7: वित्तीय सहायता का विवरण (26 अक्टूबर 2013 तक)

विवरण	लाभार्थियों की संख्या	सहायता (करोड़ रु में)
तात्कालिक सहायता (शिविर, भोजन, बर्तन इत्यादि)	793	00.67
क्षतिग्रस्त भवनों हेतु	1224	11.59
लापता / मृत व्यक्तियों हेतु	1051	35.19
क्षतिग्रस्त कृषि भूमि हेतु	1317	00.42
क्षतिग्रस्त सरकारी विभागों हेतु	-	10.45
अन्य (विधवा ,तीर्थयात्रियों हेतु)	-	04.17
कुल		68.49

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सरकार द्वारा विभिन्न मदों में कुल 68.49 करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई गई है जिसमें आपदा के दौरान 793 लोगों को 00.67 करोड़ रुपए की तात्कालिक सहायता प्रदान की गई जिसमें विभिन्न प्रकार की शिविर (राहत, बचाव एवं स्वास्थ्य), भोजन पैकेट व बर्तन इत्यादि में उपयोग हुआ। जबकि 1224 लोगों को क्षतिग्रस्त भवनों हेतु 11.55 करोड़ रुपए की क्षतिपूर्ति प्रदान की गई। लापता एवं मृत्यु के संदर्भ में 1051 लोगों को 35.19 करोड़ रुपए की सहायता दी गई वहीं कृषि भूमि के नुकसान हेतु 1317 लोगों को 00.42 करोड़ रुपयों की सहायता प्रदान की गई। क्षतिग्रस्त सरकारी विभागों के पुनर्निर्माण हेतु 16.45 करोड़ रुपए व अन्य क्षति जैसे विधवा व श्रद्धालुओं हेतु 04.17 करोड़ रुपयों की वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

गैर सरकारी संगठन एवं कारपोरेट सेक्टर की भूमिका :- आपदा में एवं बचाव कार्य हेतु सरकारी संगठन के अतिरिक्त गैर सरकारी संगठन (NGO) एवं विभिन्न कॉर्पोरेट सेक्टर ने अपने जिम्मेदारी का निर्वहन किया। इस राहत एवं बचाव तथा पुनर्निर्माण कार्य में लगभग विभिन्न 50 एजेंसियों ने योगदान किया जिसमें 37 गैर सरकारी संगठन(NGO), 9 सी०एस०आर० से तथा 2 सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों ने अपना योगदान दिया। उपरोक्त एजेंसियों ने जनपद रुद्रप्रयाग की आपदाग्रस्त क्षेत्र की पुनर्निर्माण एवं पुनर्वास हेतु लगभग 191 करोड़ रुपए का योगदान किया।

विभिन्न एजेंसियों का विभिन्न क्षेत्रों में योगदान का विवरण निम्न तालिका 8 से स्पष्ट है :-

तालिका 8: विभिन्न एजेंसियों का विभिन्न क्षेत्रों में योगदान का विवरण

क्षेत्र	एजेंसी
बाल पोषण एवं शिक्षा	प्रथम, सेव चिल्ड्रेन, एस०बी०एम०ए०, परम शक्ति पीठ
राजकीय इंटर कॉलेज का पुनर्निर्माण	ल्यूपिन फाउंडेशन, यू टर्न फाउंडेशन यू०पी० समाज कल्याण निगम
आश्रय निर्माण	केयर इंडिया, अमर उजाला, रिलायंस फाउंडेशन, गायत्री ट्रस्ट, पीपुल्स साइंस इंस्टिट्यूट, अनेंद्र गंगा मइया ट्रस्ट, टी० सी० आई० फाउंडेशन, जनकपुरी धार्मिक महासंघ, मानव सेवा हिमाद्रि जन कल्याण
स्वास्थ्य सुरक्षा	हेल्प ऐज इंडिया, सी० एच० ए० आई०, डी० एफ० वाई०, एवेरी केयर्स, स्माइल , बूँद, प्रज्ञा, दैनिक जागरण
आजीविका	ए० टी० आई०, करुणा एस०एस०एस०, मानव सेवा, वर्ल्ड विज़न, प्रज्ञा, बूँद, पिरामल फाउंडेशन, परम शक्ति पीठ
38 गांवों का अंगीकरण	माँ अमृतानंदमयी मैथ, टाटा रिलीफ कमेटी, मजगांव डॉक्स, इंडियन ओर्थोडॉक्स चर्च
विशेष आवश्यकता	अनेंद्र गंगा मइया ट्रस्ट(अस्थायी पुल निर्माण), पीपुल्स पॉवर कलेक्टिव. नर्सिंग ट्रस्ट, एस०एफ०आई०डी०

उपलब्धियां:- उपरोक्त एजेंसियों द्वारा आपदाग्रस्त क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों में पुनर्वास एवं पुनर्निर्माण की उपलब्धियों का विवरण निम्नवत है:-

1. अपंग लोगों हेतु चार हॉस्टल प्रारंभ किए गए, जिनमें एक रामपुर, एक ऊखीमठ एवं दो नारायणकोटी में स्थापित किए गए हैं।
2. 14 प्राथमिक व पूर्व प्राथमिक विद्यालयों का पुनर्निर्माण किया गया है इसके अतिरिक्त पांच राजकीय व राजकीय बालिका इंटर कॉलेज का पुनर्निर्माण किया गया है।
3. दो आंगनबाड़ी केन्द्रों का पुनर्निर्माण किया गया 260 अस्थाई आश्रय गृहों का निर्माण गैर-सरकारी संगठनों द्वारा किया गया।
4. 108 स्थायी आश्रित गृहों का निर्माण गैर-सरकारी संगठनों द्वारा किया गया।
5. विश्व बैंक की योजना के अंतर्गत सरकार द्वारा 757 घरों को वित्तीय सहायता प्रदान की गई।
6. उपरोक्त एजेंसियों द्वारा प्रभावित गांवों के लिए चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया गया।
7. 7 एंबुलेंस संचालित की गई।
8. फाटा में फिजियोथेरेपी केंद्र स्थापित किया गया है।
9. सामुदायिक शौचालय एवं जल आपूर्ति की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है।

राहत एवं बचाव कार्यों में हुई दुर्घटनाएं:- आपदा में राहत व बचाव कार्य के दौरान कुछ दुर्घटनाएं भी हुई जो निम्नवत है:-

- 25 जून 2013 को बचाव कार्य के दौरान हेलीकॉप्टर दुर्घटना के कारण 20 राहत एवं बचाव कर्मियों की मृत्यु हुई।
- 24 जुलाई 2013 को एक अन्य हेलीकॉप्टर दुर्घटना में एक चालक एवं एक टेक्नीशियन की मृत्यु हो गई।
- एक अन्य हेलीकॉप्टर दुर्घटना में टेक-ऑफ के समय चालक समेत 7 भारतीय सैनिकों की केदारनाथ क्षेत्र में मृत्यु हो गई।
- नदी को पुल के माध्यम से पार करते हुए एस०डी०एम० अजय अरोड़ा के पांव फिसलने के कारण नदी में डूबने से मृत्यु हो गई।
- आपदा राहत एवं बचाव कार्यों के मानसिक तनाव के कारण कालीमठ के पटवारी की मृत्यु हो गई।

सन्दर्भ-सूची

1. J.Wang.P,Shi, X.Yi, H.Jia, L.zhu, 2008, "The regionalization of urban Natural Disasters in Chine," Natural Hazards, 44(2)(2008), pp.169-179.
2. R. Jemli, 2021. "The importance of Natural Disasters, Governance for macroeconomic performance and countries resilience," International Journal of Disasters Resilience in the Build Environment, 12(4) (2021), pp.387-399.
3. A.Baxter, H.W.Lagearman, P.Keskinocak, 2019, "Quantitative modeling in Disaster Management: A Literature Review," IBM Journal of Research and Development, 64(1/2)(2019).
4. D.Wang, C.Qi,H.Wang, 2014, " Improving emergency response collaboration and resource allocation by task network mapping and analysis", Safety Science, 70(2014), pp.9-18.
5. H, Hashemi Doulabi, S, Khalil pourazari, 2022, "stochastic weekly operating room planning with an exponential number of scenarios", Annals of Operations Research, (2022) pp.1-22.
6. Q.zhang, Q.Lu, Y.Hu, J.Lau, 2015, "What Constrained disaster Management Capacity in the township level of china? Case studies of Wenchuan and Luhan earthquakes", Natural Hazards, 77(3)(2015), pp.1915-1938.
7. S.A. Argyroudis, S.A. Mitoulis, G.E.Winter, A.M.Kaynia, 2019, "Fragility of transport assets exposed to multiple hazards: state of the art review toward infrastructural resilience", Reliability Engineering & System Safety, 191(2019).
8. J.K. Vonmeding , L.oxedele, D.cletand, Spillane, A. Konananalli, 2011, "Mapping NGO Competency to reduce human vulnerably in post-disaster communities: comparing strategies in Sri Lanka and Bangladsh", The International Journal of the Humanities: Annual Review, 8(11)(2011), pp. 119-138.
9. Daily Reports, Rudraprayag District Administration, 2013.

10. District Administration Report, August 2013.

11. जिला प्रशासन, उत्तराखंड शासन.

12. PWD Rudraprayag.